वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 4 कुल पृष्ठ-8 14 से 20 दिसम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. शु.-11

आर्य समाज नाई की मण्डी, आगरा का 63 वाँ वार्षिकोत्सव हुआ सम्पन्न

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की रही धूम

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ के ओजस्वी भजनों ने समां बांधा

आर्य समाज नाई की मण्डी, आगरा का 63वां वार्षिकोत्व 1 से 3 दिसम्बर, 2023 को विजयनगर, क्लब के प्रांगण में भव्यता के साथ आयोजित किया गया। उत्सव में आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों को सुनने के लिए आगरा की सभी आर्य समाजों से भारी संख्या में श्रोता आते रहे। स्वामी जी के अतिरिक्त भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ की भजन मण्डली ने अपने ओजस्वी भजनों के द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया जिसमें अनेक श्रद्धालु परिवारों ने यजमान बनकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी आर्यवेश जी ने सुशोभित किया और गुरुकुल वृन्दावन के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ का दायित्व संभाला। उत्सव के पहले दिन विजयनगर क्षेत्र में शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें आर्यजनों का जोश देखते ही बनता था। शोभा यात्रा का स्थान-स्थान पर क्षेत्र के लोगों ने पुष्प वर्षा करके स्वागत किया।

वार्षिकोत्सव में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ के उपरान्त 9 बजे से 12 बजे तक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रहा और सायं 7 से 9 बजे तक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम चला। तीनों दिन आर्य समाज की ओर से आगन्तुक लोगों के लिए प्रातःकाल जलपान एवं दोपहर तथा रात्रि में भोजन की व्यवस्था की गई थी। उत्सव के अन्तिम दिन आचार्य स्वदेश जी, वैदिक प्रवक्ता श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, स्वामी सम्पूर्णानन्द आदि विशेष रूप से पधारे थे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचनों में वेद ज्ञान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सृष्टि के प्रारम्भ में मानव मात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के रचयिता परमेश्वर ने चार ऋषियों के हृदय में वेद ज्ञान दिया। इसे ब्रह्मा आदि ऋषियों ने अन्य लोगों तक पहुंचाया। इस प्रकार सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त इस पृथ्वी पर वेद ज्ञान एवं वैदिक सिद्धान्त ही लोगों के मार्ग दर्शन का मुख्य माध्यम रहे। वेद में भूगोल, इतिहास व कहानी-किस्से नहीं हैं। वेद का ज्ञान सदैव वर्तमान रहता है। इसी प्रकार किसी भी तरह की संकीर्णता का भी वेद में कोई स्थान नहीं है। वेद मानव मात्र को एक परिवार के रूप में मानते हैं। जाति, रंग, नस्ल अथवा लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव वेद स्वीकार नहीं करते। अतः कहा जा सकता है कि वेद पूरी मानवता को समान दृष्टि से देखते हैं और उन्हें कर्म करने की स्वतंत्रता देते हुए फल भोगने के लिए स्वतंत्र मानते हैं। ऐसे निष्पक्ष एवं मानवता के कल्याण से ओत-प्रोत वेद ज्ञान को यदि पूरी दुनिया के लोग स्वीकार कर लें तो सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। मनुष्यकृत मत, सम्प्रदाय, मजहब आदि में परस्पर मतभेद हो सकते हैं,

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सत्य विद्याओं का आधार – वेद

– सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वेद विषयक आर्य समाज के तीसरे नियम को समझने का हमें प्रयत्न करना है। आर्य समाज का तीसरा नियम है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इस नियम को समझने के लिए ऋग्वेद का ''अदिति शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्भुत शब्द है। ''अदिति'' के लिए ऋग्वेद (1-89-10) में निम्न मंत्र है।

अदिति द्यौः अदिति अन्तरिक्षं अदितिः माता सः पिता सः पुत्रः।
विश्वेदेवाः अदिति पंचजनाः अदिति जातं अदितिः जनित्वम्।।

इस मन्त्र का अर्थ है कि संसार में जो कुछ है वह अदिति है। 'अदिति' शब्द 'दिति' से बना है। जो दिति न हो वह अदिति होगा। 'दिती' शब्द 'दो अवखण्डने' धातु से बना है। ''दिति'' का अर्थ है - ''खंडित''। ''अदिति'' का अर्थ हुआ - ''अखण्डित''। खंडित का अर्थ है - एक से दो, दो से तीन, तीन से चार इस प्रकार बंटते जाना। अखंडित का अर्थ है - सदा सर्वदा एक बने रहना, टुकड़ों में न बंटना। जितना भौतिक ज्ञान है, जिसे हम 'विज्ञान' कहते हैं, वह सब दिति के भीतर समा जाता है क्योंकि वह कभी 'सत्य' माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते 'असत्य' हो जाता है और छोड़ दिया जाता है। अगर सब कुछ ''अदिति'' है, जो जात या अनित्व है, वह सब ''अदिति'' है, तो वेद भी अदिति है, सत्य भी अदिति है, वेद ज्ञान भी ''अदिति''है। वेद ज्ञान को अदिति कहने का अर्थ हुआ ''अखंडित'' ज्ञान ऐसा ज्ञान जो सदा सर्वदा एक बना रहता है, कभी बदलता नहीं - सदा सत्य सनातन। इसी 'अदिति' शब्द के लिए ऋग्वेद (8-18-6) में दो अन्य शब्दों का प्रयोग हुआ है जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है :-

अदितिर्नो दिवा पशुं अदितिर्नक्तं अद्वया।
अदितिः पात्वंहस सदावृधा।।

इस मन्त्र में ''अदिति'' के लिए ''अद्वय'' तथा ''सदावृध'' का पदोच्छेद करके इसके दो अर्थ हो जाते हैं - ''सदावृध'' (सद़ावृध) अर्थात जो सदा-सर्वदा बढ़ता रहे, विकसित होता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे। इसका दूसरा अर्थ है - सदा. अवृध जो सदा एक रहे, एक रूप में बना रहे। इस प्रकार वेद के ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है - ''अदिति'', ''सदावृध'' तथा सद़ाअवृध। ''अदिति'' वह ज्ञान है जो सदा रहता है, उसमें दो पक्ष नहीं हो सकते, ''सदावृध'' वह ज्ञान है जो सदा बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, आज यह और कल वह बढ़ेगा तो बदल कर ही बढ़ेगा - यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा में ''विद्वान्'' कहते हैं, 'सद़ाअवृध' वह ज्ञान है जिसे हम पहले ''अदिति'' कह आये हैं - सत्य ज्ञान, अखंडित ज्ञान एक ज्ञान, न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय ज्ञान कह सकते हैं।

भौतिक ज्ञान सदा बढ़ता रहता हैं, ''सदावृध'' रहता है बदलता रहता है, वह भौतिक विज्ञान है, इसका गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा आदान प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है, ''अदिति'' या 'अद्वय' है, दो नहीं एक है, सदा-सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह सदा दिया जाता है। संसार में सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह 'सत्य' है, ''सत्यज्ञान'' है। ''सत्य'' सदा एक रहता है, अखंडित रहता है वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा 'अद्वय'' है ''अदिति'' है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है और उसकी विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा ''अद्वय'' होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहूदी हो, पारसी हो सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिए कोई नहीं कहेगा कि सच भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं, सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो, और द्वेष भी करो, सब कहेंगे परोपकार करना उचित है कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर अपकार भी करो। कई ऐसे आधारभूत तत्व है जिन्हें 'अद्वय'' - अर्थात् उनमें दो पक्ष हो नहीं सकते - ऐसा सब कोई कहते हैं। अगर अदिति का अभिप्राय ''अद्वय'' है, तो वेद ने इसी को उक्त मन्त्र में ''सदावृध'' या सदा बढ़ने वाला, ''वर्धमान'' क्यों कहा? वर्धमान तो वह तत्व है, जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा और बड़े से बहुत बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है कल वैसा नहीं है, अर्थात् पहले जैसा नहीं है। वेद के साथ ''अद्वय'' तथा ''वर्धमान'' को जोड़ दे के रहस्य पर हम कुछ पहले और कुछ अब प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

यजुर्वेद के 40वें अध्याय में ''विद्या'' तथा 'अविद्या'' का वर्णन आता है। वहाँ कहा गया है :-

अन्यदाहुः विद्याया अन्यदाहुः अविद्याया।
इति शुश्रुम धीराणं येनत्तद् व्याचचक्षिरे।।
विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्याया मृत्यु तोर्त्वा विद्यायामृतमश्नुते।।

इन मंत्रों का अभिप्राय यह है कि जो ''अविद्या'' से मृत्यु को तर जाते हैं, और ''विद्या'' से अमृत की प्राप्ति होती है। कितनी बेतुकी बात है यह। यदि अविद्या से मृत्यु को तर जाते हैं तब तो सबका लक्ष्य अविद्या होना चाहिए। परन्तु नहीं वेद में तथा उपनिषद् में विद्या तथा अविद्या का अर्थ क्रमशः अज्ञान तथा प्रगाढ़ अज्ञान नहीं है। वैदिक टर्मिनोलोजी तथा लौकिक टर्मिनोलोजी में जमीन-आसमान का भेद है वेदों तथा उपनिषदों में भौतिकवाद को ''अविद्या'' कहा गया है, अध्यात्मवाद को विद्या कहा गया है। वेदों तथा उपनिषदों की शब्दावली तथा हमारी दिन-रात की शब्दावली में महान भेद है। यह स्पष्ट है कि भौतिक औषधियों के सेवन से रोग से मुक्ति होती है, दीर्घ जीवन हो सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है। इसी कारण तो कहीं - ''अविद्या'' मृत्यु तीर्त्वा - अविद्या से, भौतिकवाद से, मृत्यु को तो मारा जा सकता है, परन्तु - (विद्या यामृतम् श्नुते) अमृति की प्राप्ति ''विद्या से ही होती है - यहाँ ''विद्या'' का अर्थ पढ़ने-पढ़ाने की विद्या से नहीं, ''आत्मज्ञान'' की विद्या, अध्यात्मवाद की विद्या से है। वेदों की शब्दावली में भौतिकवाद ''अविद्या'' है, अध्यात्मवाद ''विद्या'' है।

यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है जब वह वर्धमान हो, आगे-आगे बढ़े, उन्नति करे। आज का वैज्ञानिक जगत् इसलिए श्रेयस्कर माना जाता है, क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल रिसर्च या परीक्षण या खोज करते-करते गलत मालूम पड़ने पर छोड़ दी जाती है। अगर विज्ञान किसी जगह आकर खड़ा हो जाये, रूक जाये, तो वह फेंक देने लायक होगा। परन्तु यह बात भौतिक विज्ञान पर ही लागू होती हे, आध्यात्मिक विज्ञान पर नहीं। अध्यात्मिक सदा ''अद्वय'' तथा ''वर्धमान'' होता हुआ भी ''अवर्धमान'' (सदाअवृध) होता है। हिंसा से शुरू कर मनुष्य ''अहिंसा'' पर जाकर रूकता है, असत्य से शुरू कर ''सत्य'' की खोज में भटकता है, चोरी-डाके स्तेय से चलता-चलता ''अस्तेय'' को लक्ष्य बनाता है, अब्रह्मचर्य तथा पर दारा गमन करता-करता ''सदाचार'' तथा ''ब्रह्मचर्य'' को ही जीवन का लक्ष्य बनाता है, छीना-छपटी से जीवन शुरू कर ''अपरिग्रह'' को ही सामाजिक जीवन का टरमिनस बनाता है। भौतिक तत्व जब तक ''वर्धमान'' तक सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने लक्ष्य को नहीं, पकड़ता, जब जीवन के ''वर्धमान'' तत्व ''अवर्धमान'' हो जाते हैं। वे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तक पहुँच जाते हैं, तब मनुष्य ''अद्वय'' ''अदिति'', ''अवर्धमान'' को जीवन के सनातन सत्य को पा लेता है।

उसी अद्वय, अतिति, अखंडित सत्य का वर्णन वेद में किया गया है। हमारे कथन का सार यह है कि वेदों में मुख्यतौर पर वर्धमान तत्वों का, भौतिकवाद का वर्णन नहीं है, क्योंकि ये तत्व भौतिकवाद का अंग होने के कारण परिवर्तनशील हैं- वेदों में ''अवर्धमान'' तत्वों का, आध्यात्मिक तथ्यों का वर्णन है क्योंकि वे नित्य हैं, अपरिवर्तनशील हैं। ज्ञान जब बढ़ेगा, तो बढ़ते-बढ़ते उसकी भी सीमा कभी न कभी आयेगी। वृक्ष ऊँचा जाता है, परन्तु कहीं तो रूक जाता है। ''वर्धमान'' जब 'अवर्धमान'' हो जाता है, तब वहीं ''अद्वय'' हो जाता है, अतिति हो जाता है। भौतिकवाद जहाँ रूक जाता है वहाँ अध्यात्मवाद शुरू हो जाता है। इसी को ऋग्वेद में ''अद्वय'', वर्धमान से ''सदावृध'' (सद़ावृध) या ''अतिति'' कहा है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं, ''ज्ञान'' या तो ''वर्धमान'' होगा या ''अवर्धमान'' होगा। ''वर्धमान'' ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है। इसलिए बढ़ता भी रहता है, ''अवर्धमान'' - ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन, एक है, अद्वय है, बदलता नहीं है। क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नहीं है, ईश्वरीय देन है इसलिए उसे वेद ने ''अद्वय'' तथा ''अदिति'' कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा ईश्वर दोनों हैं - इसलिए ज्ञान को वेद ने ''सदावृध'' भी कहा है। सदावृध के हमने दो अर्थ किये हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किये ज्ञान के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है तब इसका अर्थ सदा सर्वदा उत्तरोत्तर बढ़ने वाला, बदलने वाला अर्थ होता है, जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय ज्ञान के लिए होता है तब इसका अर्थ ''सदा-अवृधः'' - सदा एक रहने वाला। कभी न बदलने वाला, अद्वय या अदिति अर्थ होता है। सदावृध संस्कृत भाषा का विलक्षण शब्द है जिसमें ज्ञान के मानुषीय तथा ईश्वरीय दोनों पक्ष आ जाते हैं। ''सद़ावृध'' मानुषीयज्ञान है, सद़ाअवृधः ईश्वरीय या वेद ज्ञान है। जब हम कहते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, तब हमारा अभिप्राय क्या होगा? इससे क्या हमारा यह अभिप्राय होता है कि वेद में फिजिक्स कैमेस्ट्री आदि सब कुछ है, क्या रेल हवाई जहाज, तार टेलीफोन आदि बनाना सब सत्य विद्यायें वेद में हैं। इस प्रश्न पर विचार करते हुए हमें दो-तीन बातों पर विचार करना होगा। हमें इस बात का उत्तर देना होगा कि अगर वेद में फिजिक्स, कैमेस्ट्री, रेल, तार, हवाई जहाज आदि सब कुछ हैं, तो भगवान ने मनुष्य को अपने मस्तिष्क से सोचने-समझने, खोजने के लिए क्या कुछ भी नहीं छोड़ा, हमें इस बात का भी उत्तर देना होगा कि सब भौतिक आविष्कार उन लोगों ने कैसे किए जो वेद का एक अक्षर भी नहीं जानते थे।

इन सब आपत्तियों का हमारे पास क्या उत्तर है? वास्तविक स्थिति यह है कि वेदों में भौतिक-विद्याओं का बीज तो हैं परन्तु उसे पुष्पित तथा फलित या क्रियात्मक रूप देने के लिए उपवेदों की रचना की गई। उपवेदों का निर्माण इसलिए हुआ ताकि वेदों में जिन भौतिक विद्याओं का बीज था, परन्तु उसकी प्रधानता न थी, उपवेदों द्वारा उनका विशदीकरण किया जाये।

हमारा कथन यह नहीं हे कि वेद में वैज्ञानिक बातें नहीं है। हमारा कथन सिर्फ इतना है कि वेद में जो भी वैज्ञानिक बात कही गई है वह उदाहरण या उपमा के रूप में कही गई है। मुख्य रूप में नहीं कही गई है। उदाहरणार्थ, यजुर्वेद के 23वें अध्याय में यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा है - ''पृच्छामि त्वा परमन्तः पृथिव्याः'' मैं पूछता हूँ कि पृथ्वी का परम छोर क्या है? इसका उत्तर देते हुए कहा गया है - 'इयं वादः परो अन्तः पृथिव्या'

शेष पृष्ठ 6 पर

जड़पूजा के विविध रूप

—डॉ0 धीरज कुमार आर्य

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

इन उपनिषद् वचनों में भक्त ईश्वर से असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर ले चलने की प्रार्थना करता है। प्राणीमात्र मृत्यु से छूटना चाहता है और अमृत आनन्द की कामना करता है। कारण से कार्य होता है। कार्य मृत्यु को हटाने के लिए कारण को हटाना पड़ता है। जिसका यहां स्पष्ट उल्लेख है। कार्य मृत्यु है तो कारण असत् अर्थात् अज्ञानान्धकार है। इसी प्रकार कार्य आनन्द है तो कारण सत् अर्थात् तत्वज्ञानरूपी प्रकाश है। योगशास्त्र में भी कहा है– अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां...। इसके भाष्य में महर्षि व्यास भी लिखते हैं– अविद्या नेत्री मूलं सर्वक्लेशानाम् अविद्या ही सर्व क्लेशों की मूल नेत्री है। जबकि इसके विपरीत विद्या (तत्वज्ञान) अमृत (मोक्ष) को देने वाली है। तत्वज्ञानाद् निःश्रेयसाधिगमः (न्याय०), विद्ययाऽमृतमश्नुते। यजु०।।

जिस प्रकार अंधकार की निवृत्ति का एक मात्र उपाय प्रकाश है उसी प्रकार अविद्या की निवृत्ति का एकमात्र उपाय विद्या है। अतः मनुष्य को यदि सर्वविध दुःखों से छूटकर ईश्वर के परमानन्द को, अमृत को, मोक्ष को पाना है तो उसे अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी पड़ेगी तथा तदनुसार आचरण करना पड़ेगा। ''नान्यपन्था विद्यतेऽयनाय'' अन्य कोई मार्ग नहीं है।

महर्षि देव दयानन्द ने वेदादि शास्त्रों के इस सिद्धांत को भली–भांति समझा था तभी आजीवन सत्य का प्रचार किया, सत्याचरण किया, सत्यार्थप्रकाश लिखा एवं सब सत्यविद्याओं के पुस्तक वेदों का उद्धार किया। किन्तु दुर्भाग्य है उस मानव जाति का जो उनके देहत्याग के १२५ वर्ष बाद भी वेदभानु के प्रकाश में उलूकवत् चक्षु उन्मीलन न कर सकी और न करना चाहती है।

स्वयं को दयानन्द के अनुयायी कहलाने वालों में भी पुनः अविद्या पैर पसार रही है। जिसका कारण वेदों के पढ़ने–पढ़ाने और सुनने–सुनाने रूपी परमधर्म को छोड़ना तथा गुरुदेव दयानन्द पर श्रद्धा न करना ही है।

जिस जड़पूजा का महर्षि ने घोर खण्डन किया वही जड़पूजा प्रकारान्तर से आर्यों के व्यवहार में आ रही है। यथा–चित्रों पर पुष्प चढ़ाना, धार्मिक पुस्तक को नमन करना और अग्निहोत्र के पश्चात् 'हाथ जोड़ झुकाय मस्तक... .' यज्ञ प्रार्थना बोलते हुए हाथ जोड़कर नतमस्तक होना आदि।

प्रायः देखा जाता है कि किसी व्यक्ति के दिवंगत हो जाने पर उसके परिजन तथा सम्बन्धी उसके चित्र पर पुष्प अथवा पुष्पमालाएँ चढ़ाते हैं जो सर्वथा अवैदिक एवं मूर्खतापूर्ण कार्य है। चित्र केवल स्मारक अर्थात् अमुक व्यक्ति इस रूप, रंग एवं मुखाकृति का था, इस बात का स्मरण कराने वाला होता है, जिससे हम उसके जीवन से कुछ प्रेरणा ले सकें। इसके अतिरिक्त अन्य कोई प्रयोजन चित्र अथवा प्रतिमा का नहीं होता है। जब चित्र अथवा प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाये जाते हैं तो मन में कदाचित् यह विचार काम कर रहा होता है कि इससे उस दिवंगत का सम्मान होता है जबकि सच्चाई कुछ और ही है। दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा अथवा सम्मान करना यही है कि उसके जीवन में जो सद्गुण, सदाचरण तथा उनकी जो सत्शिक्षा है, उन्हें हम धारण करें क्योंकि श्रत् सत्यं दधाति यथा क्रिया सा श्रद्धा। जिससे सत्य धारण किया जाये उस क्रिया का नाम श्रद्धा है। यह श्रद्धा करना ही उसका सम्मान है। यही उसकी पूजा है क्योंकि जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है उसको पूजा कहते हैं। (आर्योद्देश्य०) पूजा नाम सत्कारस्स–ज्जनानाम् (वेदविरूद्ध– मतखण्डन)। सत्कार चेतन का ही होता है ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ का नहीं। जड़ पदार्थों का तो समुचित उपयोग एवं समुचित रक्षा करनी होती है। यही उनकी पूजा है। अतः चित्र, प्रतिमा अथवा पुस्तकादि जड़ वस्तुओं को सम्भाल कर रखना तथा उन्हें धूल मिट्टी से बचाना ही उनकी पूजा है न कि उन्हें सिर नमाना, पुष्पचढ़ाना तथा हाथ जोड़ना आदि।

प्रायः देखा जाता है कि यदि कोई पुस्तक हाथ से छूटकर भूमि पर गिर जाती है तो बालक ही नहीं शिक्षित युवा, वृद्ध भी उसे उठाकर अपने मस्तक से लगाते हैं। मुसलमान भी कुरान के अध्ययन करने से पूर्व एवं पश्चात् प्रायः उसे मस्तक से लगाते हैं। इसी प्रकार सिख गुरुग्रन्थ साहब के आगे नत–मस्तक होते हैं, उसे चंवर झुलाते हैं, उस पर रुमाले चढ़ाते हैं। इसका कारण पूछने पर सब यही कहते हैं कि पुस्तक का सम्मान करना कर्तव्य होता है और हिन्दुओं को तो सरस्वती देवी के कुपित होने का भय होता है इसलिये वे ऐसा करते हैं किन्तु ये सब विद्या एवं बुद्धि विरुद्ध क्रियाएँ हैं जो उनके अज्ञान को प्रकट करती है क्योंकि पुस्तक जड़ है उसका सम्मान उसका उचित उपयोग एवं उचित रक्षा है और उसमें जो विद्या लिखी हुई है उसका भी सम्मान उसे आचरण में लाने से है। जैसा सरस्वती का चित्र बनाया जाता है वह सब प्रतीक है। प्रतीक गौण तथा प्रतीयमान मुख्य है। पुस्तक के आगे हाथ जोड़ने से या उसे मस्तक से लगाने से सरस्वती प्रसन्न नहीं होती है तथा न करने से कुपित ही होती है। विद्या का परिश्रम पूर्वक विधिवत् ग्रहण ही सरस्वती का प्रसन्न होना है।

महर्षि दयानन्द शिक्षाप– त्रीध्वान्तनिवारण पुस्तक में इस लेख कि ''मेरे आश्रित पुरुष शिक्षापत्री का प्रतिदिन पाठ करें और जो विद्याहीन होवें प्रीति से उसका श्रवण करें और श्रवण करना भी न बने तो इस शिक्षापत्री की अत्यन्त प्रीति से प्रतिदिन पूजा करें'' के खण्डन में स्पष्ट लिखते हैं कि इस जड़, व्यर्थ पुस्तक की पूजा करने का उपदेश देने में (लेखक की) अयोग्यता मालूम पड़ती है।

सिख मत के प्रसंग में लिखते हैं– मूर्तिपूजा तो नहीं करते, किन्तु उससे विशेष ग्रन्थ की पूजा करते हैं। क्या यह मूर्तिपूजा नहीं है?किसी जड़ पदार्थ के सामने सिर झुकाना वा उसकी पूजा करनी, सब मूर्तिपूजा है। (स०प्र० ११वाँ समु०)

महर्षि के जीवन की एक घटना भी इस विषय पर प्रकाश डालती है। ऋषिवर ने एक बार काजी जी का समाधान करके कुरान को हाथ से पृथ्वी पर रख दिया तो काजी ने कहा– आपने यह क्या किया कि कुरान को पाँव में रख दिया। स्वामी जी– काजी साहब! तनिक विचार, करो, क्या काजी नाम ही के कहलाते हो। कागज और स्याही कैसे बनती है, और छापाखाने में किस पर कागज छपते हैं और कलम क्या चीज है और कहां उत्पन्न होती है?इस पर निरूत्तर होकर काजी जी उठ खड़े हुए और उनके साथ सब यवन शान्त होकर चले गये। (लेखराम पृ०–५४८)

इसी प्रकार जो सज्जन हवन में अग्नि के समक्ष हाथ जोड़ते हैं तो क्या वह जड़पूजा नहीं है?यदि कहो कि परमेश्वर को नमन करते हैं अग्नि को नहीं, तो यह कहना ठीक नहीं क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है। जब हाथों में हैं क्यों जोड़ते हो, सिर में है सिर क्यों नमाते हो?और जो व्याप्य (अग्नि, वेदि आदि) को करते हो तो मूर्तिपूजकों से आप भिन्न नहीं हो सकते। अतः अग्निहोत्र में अग्नि अथवा वेदि को हाथ जोड़ना, सिर नमाना आदि अवैदिक कर्म होने से त्याज्य है। हमें गुरुवर देवदयानन्द के ग्रन्थों का गम्भीर स्वाध्याय करके तदनुसार आचरण करने का सर्वथा प्रयास करना चाहिए तभी कल्याण होगा।

—ग्राम-पोस्ट : रमाला, जिला-बागपत (उत्तर-प्रदेश), दूरभाष : ९६२७५४३७४४

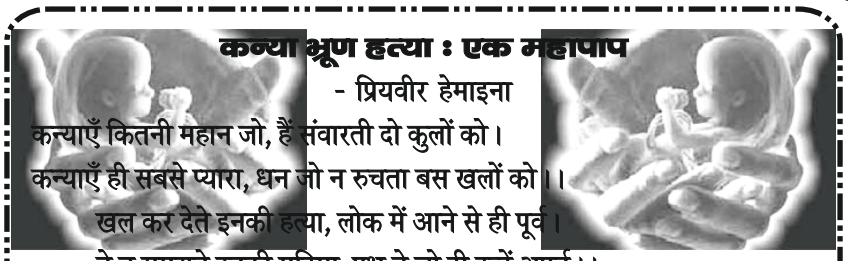

कन्या भ्रूण हत्या : एक महापाप

- प्रियवीर हेमाइना

कन्याएँ कितनी महान जो, हैं संवारती दो कुलों को।
कन्याएँ ही सबसे प्यारा, धन जो न रुचता बस खलों को।।
खल कर देते इनकी हत्या, लोक में आने से ही पूर्व।
वे न समझते इनकी महिमा, प्रभु ने जो दी इन्हें अपूर्व।।
प्रभु ने दिया है कन्याओं को, 'मातृशक्ति' का दिव्य वरदान।
हृदय में है भर दिया इनके, दया ममता का अनुपम दान।।
विनम्रता औ कोमलता में, क्या कोई है इनके समान।
बसते हैं बस वहीं देवता, जहाँ होता इनका सम्मान।।
जहाँ न मिलता इनको सम्मान, क्रियाएँ सभी होती निष्फल।
कोई भी राष्ट्र न देख सके, कन्याओं बिना स्व-सुन्दर कल।।
यदि जीजाबाई ना होती, क्या वीर शिवाजी हम पाते?
यदि लक्ष्मीबाई नहीं होती, क्या शब्द 'मर्दानी' हम पाते।।
आज भी लड़कियाँ ही लेती, परीक्षाओं में ऊँचा स्थान।
लड़कियाँ कर रही लड़कों को लज्जित प्रतिभा का देकर दान।।
क्या श्रीमती इन्दिरा द्वारा, चलाया गया न पिता का वंश?
बनीं राष्ट्र की प्रधानमंत्री, समुन्नत किया पिता का वंश।।
बेटी बेटों के मुकाबले, में लगती सदा अधिक प्यारी।
है बेटों के मुकाबले में, बेटी में अधिक वफादारी।।
अस्तु! जब बेटी ही लगती, ज्यादा परिश्रमी व प्यारी है।
हा! हन्त! फिर क्यों समाज में, कन्या भ्रूण हत्या जारी है।।
सब ऋषि महात्मा महान पुरुष, नारी से ही जनमें जाते।
फिर भी देख गर्भ में बेटी, हैं गर्भपात क्यों करवाते।।
यदि केवल लड़के ही हों, समाज में लड़कियाँ नहीं हों।
यदि केवल फूल ही फूल हों, उन फूलों में गन्ध नहीं हो।।
थोड़ा सोचो समझो फिर क्या, यह सृष्टिचक्र चल पायेगा?
प्रभु के द्वारा चलाया गया, संसार-चक्र रूक जायेगा।
कन्या भ्रूण हत्या के पाप से, वे पापी क्या बच पायेंगे?
इस महापाप के जिम्मेदार, वे ही तो जाने जायेंगे।।
कन्या भ्रूण हत्याएँ करके, क्यों पाप के भागी बनते हो?
ईश्वर की न्याय व्यवस्था में, क्यों दण्ड के भागी बनते हों।।
बदलो अपनी निकृष्ट सोच, मानो अमूल्यतम कन्या को।
कन्या भ्रूण हत्या का पाप, लगाओ न नष्ट कर कन्या को।।

- 318, विपिन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059, मो.:-7503070674

आर्य समाज सैक्टर–19 फरीदाबाद का वार्षिक समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

दिनांक 20 नवम्बर, 2023 को स्वामी आर्यवेश जी ने किया सात दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन

फरीदाबाद की प्रसिद्ध आर्य समज सैक्टर–19 का वार्षिक समारोह दिनांक 20 से 27 नवम्बर, 2023 तक अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से मनाया गया। अलग–अलग स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किये गये और अन्तिम दिन आर्य समाज के प्रांगण में भव्य आयोजन किया गया। इस सात दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह श्रद्धा मंदिर पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद के प्रांगण में आयोजित किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। हजारों की संख्या में उपस्थित छात्र–छात्राओं और आर्यजनों को स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित किया और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती को उत्साहपूर्ण मनाने की प्रेरणा दी। सायं 4 से 7 बजे तक ओल्ड फरीदाबाद मुख्य बाजार में शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त डॉ. नरेन्द्र अग्निहोत्री, श्री रघुवीर शास्त्री, सुश्री निकिता आर्या आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान पूरे बाजार में लगाये गये ध्वनि विस्तारक यंत्रों के माध्यम से हजारों लोगों ने सुना। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द जी के कार्यों एवं उपकारों पर प्रकाश डाला तथा बताया कि समाज की विभिन्न कुरीतियों को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द जी ने अथक संघर्ष किया। उन्हें 17 बार जहर देकर और कई बार प्राण घातक आक्रमण करके लोगों ने रास्ते से हटाने की कोशिश कि और अन्त में वे शरारती तत्व कामयाब भी हुए, किन्तु महर्षि दयानन्द सत्य से विमुख नहीं हुए और पाखण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों आदि के विरुद्ध अपनी आवाज गुंजाते रहे। देश को आजाद कराने के लिए जिन नवयुवकों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया उनमें अधिकतम आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रभावित थे। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज, सैक्टर–19 और आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के पदाधिकारियों को भी साधुवाद दिया कि वे सार्वजनिक स्थानों पर आर्य समाज का कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इस पूरे कार्यक्रम में समाज के प्रधान डॉ. गजराज सिंह आर्य तथा उनकी पूरी टीम बधाई के पात्र हैं।

कार्यक्रम में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महेशचन्द्र आर्य, श्री अशोक आर्य, श्री रघुवीर शास्त्री, श्रीमती विमला अरोड़ा, श्री मदनलाल तनेजा, श्री प्रेम मित्तल एडवोकेट, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री नन्दलाल कालड़ा, डॉ. सत्यदेव आर्य, श्री मकेन्द्र कुमार आर्य आदि भी उपस्थित थे।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज नाई की मण्डी, आगरा का 63वाँ वार्षिकोत्सव हुआ सम्पन्न

मान्यताएं भी अलग–अलग हो सकती हैं, किन्तु ईश्वरीय ज्ञान वेद को लेकर परस्पर मतभेद नहीं हो सकते। आवश्यकता केवल इस बात की है कि सभी लोग वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए उसका अनुसरण करना स्वीकार करें। आज पूरी पृथ्वी पर विभिन्न मत–सम्प्रदायों में बंटा हुआ मानव समाज कर्मकाण्डों एवं पूजा–पद्धतियों को लेकर अलग–अलग खेमों में बंटा हुआ है और धर्म के नाम पर परस्पर द्वन्द चलता रहता है, जबकि दुनिया में धर्म सदैव एक ही हुआ करता है। अलग–अलग तो मत या सम्प्रदाय ही हो सकते हैं। जैसे अग्नि का धर्म जलाना है और पानी का धर्म शीतलता है इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य का भी धर्म एक ही होता है। कुछ विशेष गुण महापुरुषों ने निर्धारित किये हुए हैं जिन्हें आचरण में लाकर प्रत्येक मनुष्य धार्मिक बन सकता है। वे गुण सबके लिए समान होते हैं। वर्तमान समय में पूरी मानवता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यही है कि जाति, मजहब, रंग, क्षेत्र आदि के आधार पर बंटी हुई मानवता को कैसे एक सूत्र में पिरोया जाये। इसका एक मात्र समाधान परस्पर संवाद, वार्ता, चर्चा आदि करके वैदिक सिद्धान्तों पर एकमत होना।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने दूसरे प्रवचन में मनुर्भव की व्याख्या करते हुए विस्तार से बताया कि अनेक मत, सम्प्रदाय एवं धार्मिक कर्मकाण्ड, पूजा पाठ होते हुए भी लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलती है। मात्र मनुष्य का शरीर प्राप्त हो जाने से ही कोई मनुष्य बन सकता, जब तक कि उसके अन्दर मनुष्यता अर्थात् इंसानियत के गुण नहीं आ जाते। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि अपने बारे में ही सोचना, अपना ही पेट भरना, अपनी उन्नति के लिए ही सब प्रयास करना और अन्यों के सम्बन्ध में न सोचना इंसानियत नहीं कहलाती। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए कहा है कि ''मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर अपनी आत्मा के समान अन्यों के सुख–दुख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं – कि चाहे वे महाअनाथ, निर्बल क्यों न हों – उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वदा किया करें। इस काम में चाहे कितना ही दारुण दुख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरुप धर्म से पृथक कभी न होवे।'' इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अन्य लोगों के सुख–दुःख में संवेदनशील होना चाहिए। उनकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। अतः वेद के अनुसार जो व्यक्ति सही अर्थों में मनुष्य बनना चाहता है वह पर–दुःख कातरता के गुण को अपनाये। औरों के दुःख मिटाने के लिए यदि स्वयं कष्ट उठाना पड़े तो उससे भी कभी पीछे न हटे। स्वामी जी ने अनेक उदाहरण देकर समझाया कि कैसे लोग स्वार्थी बनकर दूसरे लोगों को हानि पहुंचाते हैं, लूट–खसोट करते हैं, धोखा देते हैं, अपनी स्वार्थ की सिद्धि के लिए निम्न से निम्न कार्य करने से भी नहीं चूकते। ऐसे लोग मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। अतः एक अच्छा इंसान ही समाज में सदैव सम्मान पा सकता है। इसी प्रकार स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विश्व को देन विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी समग्र क्रांति के पुरोधा थे। उन्होंने समाज के किसी भी क्षेत्र को नहीं छोड़ा और लोगों की भलाई के लिए आजीवन कष्ट सहे। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों की ओर लौटो का एक महत्त्वपूर्ण संदेश दिया था, उनकी मान्यता थी कि वेद के विपरीत कोई भी मान्यता लोगों के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकती। उन्होंने अपने सिद्धान्तों की कसौटी वेद को बनाया। महर्षि ने भारत की स्वतंत्रता आन्दोलन, नारी शिक्षा, दलितोद्धार, जातिवाद मुक्त समाज, धार्मिक अन्धविश्वास मुक्त समाज, आर्य भाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की मजबूती से पैरवी की। वे महान् योगी, अखण्ड ब्रह्मचारी, क्रान्तद्रष्टा संन्यासी थे। उनकी 200वीं जन्म जयन्ती के वर्ष को केन्द्रित करके पूरे विश्व में बड़े–बड़े आयोजन किये जा रहे हैं। प्रत्येक आर्य एवं ऋषि दयानन्द के भक्त को महर्षि के संदेश एवं जीवनवृत्त को घर–घर पहुंचाने का संकल्प लेना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम 200 नये लोगों से सम्पर्क करे और ऋषि दयानन्द के लोगों के प्रति उपकारों को बताये और उन्हें साहित्य भेंट करे। यह कार्य मजबूत संकल्प के साथ ही किया जा सकता है जो अत्यन्त आवश्यक है।

तीन दिन के इस कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान श्री मनोज खुराना एवं उनकी पूरी टीम ने अथक परिश्रम करके कार्यक्रम को भव्य रूप प्रदान किया। उनके साथ श्री अनुज आर्य मंत्री, श्री वीरेन्द्र कनवर आदि का मुख्य सहयोग रहा। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक आर्य अश्विनी दुबे ने जहाँ मंच का सुन्दर संचालन किया वहीं उन्होंने विजयनगर क्लब हॉल एवं पूरे परिसर को शानदार ढंग से सजाकर कार्यक्रम को चार चांद लगाये। कार्यक्रम नगर की लगभग सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी सम्मिलित हुए जिनमें मुख्यतया श्री रमाकान्त सारस्वत, श्री विजयपाल चौहान, श्री विजय अग्रवाल, डॉ. विद्यासागर, माता शांति नागर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

2 दिसम्बर, 2023 को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कई विदुषी बहनों ने अपने विचार एवं भजन प्रस्तुत किये। महिला सम्मेलन का संयोजन श्रीमती वन्दना ने किया। कार्यक्रम बहुत उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

ओ३म् योग संस्थान पाली, जिला–फरीदाबाद का रजत जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री भंडारू दत्तात्रेय, विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज, सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी महाराज, ब्रह्मनिष्ठ संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज एवं सार्वदेशिक आर्य वीरदल के संचालक स्वामी देवव्रत जी महाराज की हुई गरिमामयी उपस्थिति

ओ३म् योग संस्थान के संस्थापक योगीराज ओम प्रकाश जी महाराज ने किया समारोह का संयोजन

ओ३म् योग संस्थान पाली, जिला–फरीदाबाद का रजत जयन्ती का समारोह 10 दिसम्बर, 2023 को भव्यता के साथ मनाया गया जिसमें हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री भंडारू दत्तात्रेय, योग गुरु स्वामी रामवेद जी महाराज ने विशेष रूप से भाग लिया। इस अवसर पर गरीब परिवारों की पांच शादियाँ भी कराई गई जिन्हें राज्यपाल महोदय तथा स्वामी रामदेव जी महाराज ने आशीर्वाद दिया।

अपने विचार प्रस्तुत करते हुए राज्यपाल महोदय ने हुनरबन्द युवाओं का आह्वान किया कि नौकरियों के पीछे भागने के बजाये दूसरों को रोजगार देने वाले सशक्त व समर्थ प्रतिनिधि बनें। उन्होंने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बहुआयामी है। आत्म निर्भर भारत के लक्ष्य की प्राप्ति में यह उपयोगी सिद्ध होगी।

विशिष्ट अतिथि योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने कहा कि योग सिर्फ व्यायाम नहीं, आत्म चिन्तन और आत्म साक्षात्कारा भी है। हमें देश को योग के दम पर ही आत्म निर्भर बनाना है। स्वामी जी ने कहा कि लक्ष्य की प्राप्ति में लगे रहने और निरन्तर पुरुषार्थ करने से ही सफलता मिलती है।

संस्थान के अध्यक्ष डॉ. ओम प्रकाश महाराज ने संस्थान की

गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने सभी उपस्थित अतिथियों का अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर जिला उपायुक्त श्री विक्रम सिंह, हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्ष रेणू भाटिया, स्वामी रामदेव जी महाराज की माता श्रीमती गुलाब देवी जी, ई.एस.आई. मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. असीमदास, महन्त मुनिराज, डॉ. यशदेव शास्त्री, श्री सी.बी.रावल, श्री सूर्यदेव त्यागी, श्री जितेन्द्र भाटिया, श्री संदीप शास्त्री, श्री प्रमोद गुप्ता, श्री देवराज आर्य, श्री वेगराज आर्य, श्री योगेन्द्र तथा कविता आदि सम्मिलित हुए। संस्थान के मंत्री डॉ. संदीप जी ने कार्यक्रम की व्यवस्था कुशलता के साथ संभाली।

रजत जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा पद को ब्रह्मनिष्ठ संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज ने सुशोभित किया हुआ था। उनका आशीर्वाद सभी याज्ञिक लोगों को प्राप्त हुआ।

9 दिसम्बर को प्रातः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी एवं सार्वदेशिक आर्य वीरदल के संचालक स्वामी देवव्रत जी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए और यज्ञ के उपरान्त दोनों महानुभावों के प्रवचन हुए।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए विस्तार से बताया कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और इससे सभी प्रकार के प्रदूषण समाप्त होते हैं। यज्ञ से मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी होती है।

स्वामी देवव्रत जी ने जीवनरूपी नदी को पार करने के लिए वेद के एक मंत्र की व्याख्या करते हुए बताया कि हमें जीवन में त्याग भाव से सबको साथ लेकर चलना चाहिए जिससे ये जीवनरूपी नदी भली प्रकार पार की जा सके।

यज्ञ में सैकड़ों यज्ञप्रेमी महानुभावों के अतिरिक्त ओ३म् शिक्षा स्कूल के सैकड़ों छात्र–छात्राएं भी उपस्थित थे जिन्होंने बड़ी श्रद्धा के साथ व्याख्यानों को सुना और बाद में प्रश्नोत्तर भी किये। स्वामी द्वय का ओ३म् योग संस्थान की ओर से स्मृति चिन्ह देकर अभिनन्दन किया गया।

डॉ. ओम प्रकाश महाराज ने स्वामी आर्यवेश जी के सम्मान में बोलते हुए कहा कि मेरे एक छोटे से निवेदन पर स्वामी जी आज अपना अमूल्य समय निकालकर इस कार्यक्रम में पधारे हैं यह उनका हमारे प्रति और संस्था के प्रति स्नेह भाव है। इससे हमको विशेष शक्ति मिलती है। उन्होंने स्वामी जी का विशेष आभार भी व्यक्त किया। यज्ञ के उपरान्त डॉ. संदीप योगाचार्य ने संस्थान के स्कूल और अन्य गतिविधि केन्द्र का दौरा भी करवाया।

Art Of Vedic Living

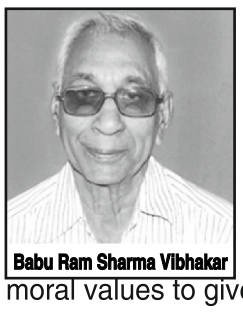
Babu Ram Sharma Vibhakar

Man is endowed with the spiritual science. He in his family has to serve and exercize some moral values to give a vent to the 'Art of Vedic Living' one who believes in the modes and techniqnes of Vedic style. He certainly follows some rules set up by nature and godly instructions and directions to go better on the path of Rishis and our forefathers who used to start their morning by performing prayer to God or parmatma or an unique energy. Then it was the duty of the family members to perform yajan or Agnihotra along with chanting mantras from the Vedas. But now-a-days the youngsters have no time to perform the yajan.

Now these practices are rare in cases excepting birth days or Grah Pravesh etc. Anyway the concept is clear that a family living with the vedic system as we had to observe in the past. But now due to the Arya Samajic Movements the rise (Jagarti) has taken place and so it accepted our belongings. We have begun to frame our vedic living style.

The future is bright we should welcome it heartily and a jest of Vedic style of living. And we should change our hobits of studying the books on Vedic religion which presents a light to our arguments for the betterment of our thoughts. If we sharpen our logic, we can never be cheated. We transform our entity under the influx of it and move according to the best of our knowledge and concept. A good book is always a good friend indeed.

- Babu Ram Sharma Vibhakar
Mo.-9350451497

पृष्ठ 2 का शेष

सत्य विद्याओं का आधार – वेद

यह वेदी जहाँ हम यज्ञ कर रहे हैं पृथ्वी का परला सिरा है। इसका अर्थ हुआ कि पृथ्वी गोल है जिसे सिद्ध करने के लिए गैलिलियो को जेल जाना पड़ा था। प्रत्येक गोल वस्तु का आदि तथा अन्त एक ही स्थल होता है। परन्तु यह कथन जियोलोजी के रूप में नहीं कहा गया। यज्ञ के विषय में उदाहरण के रूप में कहा गया है। हमारा कथन है कि वैज्ञानिक या भौतिक तथ्यों को परम्परा की तरफ से बतलाने की जरूरत नहीं, उनका आविष्कार करने के लिए भगवान ने मनुष्य को बुद्धि दी है।

ईश्वरीय ज्ञान आध्यात्मिक तथ्यों को वेद द्वारा लिखा गया है, अध्यात्म विद्या ही सत्य विद्या है, वही अद्वय है, वही अदिति है, वही अवर्धमान है वही विद्या है, भौतिक विद्या को वेद ने ''सदावृध'' सदा बढ़ने वाली विद्या कहते हुए भी ''अविद्या'' कहा है। भौतिक विद्या को अविद्या कहते हुए भी जीवन के लिए उपयोगी होने के कारण उसे भी वेद ने सम्मान का स्थान देते हुए कहा है - अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा अविद्या से मृत्यु को तो तारा ही जा सकता है, परन्तु अमरत्व तो अध्यात्म से ही प्राप्त होता है।

हमने इस लेख माला में कई बातों को जगह-जगह दोहराया है। इसे दोहराने का कारण विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करना है। इस लेखमाला से किसी को भ्रान्ति न हो इसलिए इस लेखमाला के मुख्य मुद्दों को लिखकर मैं इसे समाप्त कर रहा हूँ।

(क) इस लेखमाला में जो दिशा हमने अपनाई है उससे स्पष्ट है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

(ख) इस लेखमाला से स्पष्ट है कि वेद ने ज्ञान के दो भेद किये हैं -

'विद्या' तथा 'अविद्या'।

(ग) इस लेखमाला से स्पष्ट है कि वेद ज्ञान को ''अद्वय'' (नित्य, सनातन) तथा वर्धमान (अनित्य परिवर्तनशील) इन दो भागों में भी बाँटा है। 'वर्धमान' की परिणति 'अवर्धमान' में होती है। जब वर्धमान अवर्धमान हो जाता है तब भौतिक अभौतिक या अध्यात्म में प्रविष्ट हो जाता है।

(घ) इस लेखमाला में हमने 'भौतिक विज्ञान' को मानुषीय एवं वर्धमान माना है जो परिवर्तित होता रहता है और अनित्य कहा जा सकता है, ''दैवीय ज्ञान'' को ''ईश्वर प्रदत्त'' एवं ''अद्वय'' माना है जो सदा एक है, नित्य है, सनातन है, जिसमें परिवर्तन न होता है, न हो सकता है। वेद के सब सत्यविद्याओं की पुस्तक होने के लिए हमने वेद की इसी स्थिति को माना है और इसी को इन लेखों में स्पष्ट किया है।

(ङ) वेद का कहना है कि यद्यपि ''विद्या'' तथा ''अविद्या'' दोनों जीवन के लिए उपयोगी है, तो भी ''अविद्या'' से सिर्फ मृत्यु को तारा जा सकता है, ''विद्या'' से अमरत्व की प्राप्ति होती है। 'विद्यांचाविद्यां च यदस्तद् वेद उभयं सह' - विद्या तथा अविद्या दोनों का ज्ञान होना चाहिए लौकिक तथा पारलौकिक जीवन के लिए दोनों उपयोगी हैं।

(च) 'अविद्या' से मृत्यु को तारा जा सकता है - इसका अभिप्राय हमने यह लिया है कि भौतिक विज्ञान या भौतिकवाद से मनुष्य को भौतिक लाभ तो हो सकता है, आध्यात्मिक लाभ नहीं। मानवीय ज्ञान को वेद ने 'अविद्या' का नाम दिया है। वेद की अपनी टर्मिनोलोजी है।

(छ) 'विद्या' से अमृत्व प्राप्त होता है - इसका अर्थ हमने आध्यात्मिक ज्ञान लिया है। आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात् अध्यात्मवाद से अमरत्व प्राप्त होता है।

(ज) वेदों में फिजिक्स, कैमेस्ट्री, जियोलोजी आदि निकालने के कई विद्वानों ने यत्न किया है निकाले भी हैं, मैं उनकी सराहना करता हूँ। परन्तु उपनिषद में लिखा है कि नारद मुनि ऋषि सनत्कुमार के पास गए और विषादमय स्वर में बोले कि मैंने संसार की सब विद्याओं का अध्ययन किया, परन्तु आत्म विद्या नहीं सीखी इसलिए 'सोऽहं भागवो सीदामि' - मैं खिन्न रहता हूँ, उदास रहता हूँ। मैं मन्त्रविद् हो गया हूँ, आत्मविद् नहीं हुआ। इस स्थल से स्पष्ट है कि नारद वेद की 'विद्या च अविद्यां च' - इस मन्त्र की भाषा में बोल रहा है। इसलिए मैं कहता हूँ कि वेद मुख्य रूप से आध्यात्मिक ग्रन्थ है, भौतिक बातों का जहाँ जहाँ वर्णन उनमें जरूर पाया जाता है, परन्तु वह कभी-कभी आध्यात्मिक को समझने-समझाने के लिए यहाँ उदाहरण अथवा रूपक के लिए किया गया है। इसलिए ऋषि दयानन्द ने वेद मन्त्रों की मुख्य रूप में आत्मा-परमात्मा परक व्याख्या की है। अध्यात्म शास्त्र ही नित्य है, सनातन है, भौतिक विज्ञान खोजने की वस्तु है, वह मनुष्य स्वयं खोज सकता है, आध्यात्मिक ज्ञान देने तथा पाने की वस्तु है, वह भगवान् मानव को देता है। इसलिए कहा गया है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

(झ) तो क्या वेद में विज्ञान नहीं है? हमारा उत्तर है - वेद में विज्ञान है, और अवश्य है, परन्तु ऐसा विज्ञान जो नित्य है, अखंड है, अद्वय है, जो सदा अवृध है, जो नित-नित बदलता नहीं है, जो विज्ञान बदलता रहता है, वह वेद की परिभाषा में 'अविद्या' है, 'सदावृध' - 'सदा-वर्धमान' है। 'सदावृध' - सदा वर्धमान ज्ञान मनुष्य के हाथ में है, 'सदा अवृध' सदा एक रहने वाला ज्ञान भगवान् 'वेद' द्वारा मानव को देता है।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पतियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

बलिदान दिवस 19 दिसम्बर के अवसर पर विशेष

आजादी के दीवाने अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह

– कु. भावना

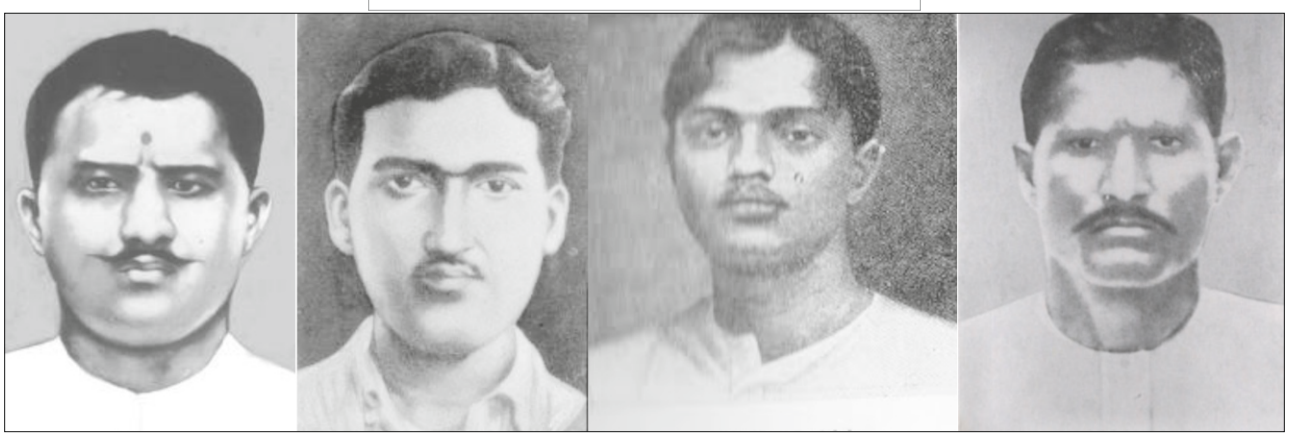

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी पं. मुरलीधर तिवारी के यहाँ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी विक्रमी सम्वत् 1884 को राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ। वे कचहरी में स्टाम्प बेचकर जीवन यापन करते थे। जब राम प्रसाद चौदह वर्ष के थे, तब उन्हें घर में चोरी करने, सिगरेट और भांग पीने तथा श्रृंगाररस पूर्ण उपन्यास पढ़ने की बुरी आदत पड़ गई। एक दिन नशे की हालत में पकड़े जाने से बुरी आदतें दूर हुई। परन्तु सिगरेट बहुत ज्यादा पीते थे। सहपाठी श्री सुशीलचन्द्र सेन के विशेष प्रयत्नों से यह बीमारी भी छूटी। समय बदला, रामप्रसाद बिस्मिल के धार्मिक संस्कार जागृत हुए। एक सज्जन की देखादेखी व्यायाम करने लगे। ब्रह्मचर्य पालन व नियमित व्यायाम करने से उनका शरीर बल्ष्ठि व बुद्धि तेज हो गई। मुंशी इन्द्रजीत की प्रेरणा से वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए जो समाज सुधार व स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रणी संस्था थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' के अध्ययन से तो उनका जीवन ही बदल गया। पर्यावरण शुद्धि व जनकल्याण के लिए वे 'यज्ञ' करते तथा विद्वानों की सेवा करते।

उन्होंने सर्वप्रथम शाहजहाँपुर में 'आर्यकुमार सभा' की स्थापना की। इसमें बच्चों व युवकों को देशभक्ति और समाज सेवा की प्रेरणा दी जाती थी। 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत युवकों को आत्मरक्षा व शस्त्र-शास्त्र का अभ्यास कराया जाता था। इसका साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार होता था। इसमें वाद-विवाद, भाषण व धार्मिक पुस्तकों का पठन-पाठन हुआ करता था। उन्होंने 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत अश्फ़ाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह आदि अनेक देशभक्त नौजवान तैयार किये। भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुनकर उनके शरीर में आग लग गई। उन्होंने विचारा कि ''अंग्रेज बड़े पापी हैं, इनके राज्य में न्याय नहीं, मैं इसका बदला अवश्य लूँगा।'' जीवन भर अंग्रेजों के राज्य को विध्वंस करता रहूँगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात् वे सुप्रसिद्ध देशभक्त संन्यासी स्वामी सोमदेव जी से मिले, जो अपने भाषणों में जन-जागृति व आजादी के महान कार्य में जुटे हुए थे। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरूद्ध उन्होंने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया। इटावा के शिक्षक पं. गेन्दालाल दीक्षित उनके 'गुरु' थे। उनसे वे बन्दूक, पिस्तौल आदि शस्त्र चलाने सीखते। रामप्रसाद बिस्मिल ने अमेरिका को आजादी कैसे मिली, स्वदेशी रंग, क्रान्तिकारी जीवन, मन की लहर आदि पुस्तकें प्रकाशित कर क्रान्तिकारी दल के लिए धन की व्यवस्था की। किन्तु यह पर्याप्त न थी।

अंग्रेज सरकार भारतीयों पर हर तरह के जुल्म करती थी। अतः क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी में सरकारी खजाने को लूटकर दल की गतिविधियाँ तेज की जाये। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। अन्ततोगत्वा काकोरी के करीब रेलगाड़ी खड़ी करके सरकारी खजाना रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि मात्र दस क्रान्तिकारियों ने लूट लिया। इससे दस हजार रुपये उनके हाथ लगे। कार्यकर्ताओं को इससे बड़ा उत्साह मिला। यह धन स्वाधीनता संग्राम में व्यय होने लगा।

काकोरी डकैती के बाद पुलिस बहुत सचेत हो गई। दल के सदस्य बनवारी लाल के सरकारी गवाह बन जाने से क्रान्तिकारी संगठन को गहरा धक्का लगा। राजद्रोहात्मक साहित्य पकड़ा गया। काकोरी काण्ड में लिप्त सभी सदस्य पकड़े गये। केवल चन्द्रशेखर 'आजाद' ही थे, जो बन्दी न बनाये जा सके। क्रान्तिकारियों को अमानवीय यातनाएँ दी जाने लगी। अशफ़ाक उल्ला खाँ को गहरी पीड़ा पहुँचाई गई। दल के सदस्य राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी कलकत्ता से गिरफ़्तार किये गये। अंग्रेजों के जुल्मों का क्या कहना?किसी कवि ने कहा है -

देश हित वार दीं, अनेक ही जवानियाँ।
जिनके खून से लिखी, स्वदेश की कहानियाँ।।

अशफ़ाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल को बड़ा भाई मानते थे। अतः इसी लगाव के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हें बिस्मिल का सहकारी मानती थी। अशफ़ाक को हर प्रकार से पीड़ा पहुँचाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें बहकाने के लिए मुसलमान पुलिस अफसर को भेजा। पर आजादी का दीवाना अशफ़ाक उल्ला खाँ तो सच्चा देशभक्त था, अपने कर्तव्य से विमुख न हुआ। वीराग्रणी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को जज ने फाँसी की सज़ा व शचीन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुकन्दी लाल, मन्मथ लाल गुप्त को कालेपानी की कठोर यातनाएँ दी गई। 19 दिसम्बर, 1927 को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी पर लटकाने से पूर्व उनकी 'अन्तिम इच्छा' पूछी गई, जिसे सुनकर कर्मवीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने उच्च स्वर से कहा - 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो' यह मेरी अन्तिम कामनाहै। वेद के पवित्र मन्त्र व जोशीले गीत गाते हुए बिस्मिल और उनके साथियों ने हंसते हुए फाँसी के फन्दे चूम लिये और सदा के लिए अमर हो गए।

इन क्रान्तिकारियों ने दशवासियों से अन्तिम प्रार्थना करते हुए कहा था कि वे सुशिक्षित बनें तथा जो कुछ करें, सब मिलकर देश की भलाई के लिए करें। इसी में सबका भला है।

मरते बिस्मिल, रोशन लाहिड़ी, अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे सैकड़ों पैदा इनके खून की धार से।।

'अशफ़ाक मेरा सच्चा मित्र एक संस्मरण' नाम शीर्षक से पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने लिखा कि -

''मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम-राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम-राम' के भेद समझे।''

बिस्मिल ने जेल में फाँसी से 3 दिन पूर्व दिल को हिला देने वाली आत्मकथा में यह लिखा है - ''अखफ़ाक! तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की इच्छा थी। तुम मेरे छोटे भाई जैसे हो गये। सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान का मेल कैसा?तुम एक सच्चे मुसलमान थे और और सच्चे देशभक्त भी। तुमने हमेशा चाहा कि मुसलमानों की खुदा अक्ल दे कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर हिन्दुस्तान की भलाई करें..... मैंने, अशफ़ाक! अपना तन-मन-धन सब मातृसेवा में अर्पण करके तुम जैसे अपने प्यारे मित्र को भी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।''

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज कोसीकलां (मथुरा) का 85वां वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम का किया उद्घाटन

आर्य समाज कोसीकलां का 85वां वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 28 अक्टूबर, 2023 को आयोजित किया गया जिसमें सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त आचार्य स्वदेश जी, आचार्य आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता, श्री ओमवीर जी आर्य भजनोपदेशक बुलन्दशहर, प्रियंका आर्या, श्री धनीराम बेधड़क, श्री बालकिशन आर्य आदि सम्मिलित हुए।

उत्सव का उद्घाटन करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने अपना ओजस्वी उद्बोधन देकर सभी आर्यजनों को झकझोर दिया और उनका आह्वान किया वे आर्य समाज के आन्दोलनात्मक, तेजस्वी स्वरूप को पुनः लौटायें। स्वामी जी ने कहा कि आज देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड तथा अन्धविश्वास चरम सीमा पर है। आर्य समाज के सिवाय इनके विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठाता। अतः आर्यों को मजबूती के साथ इन बुराईयों से टकराना चाहिए। आर्य समाज के विचारों से युवाओं को जोड़ना चाहिए और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों से अवगत कराना चाहिए जिससे आज का युवा आर्य विचारों और वैदिक सिद्धान्तों पर चलकर समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए कार्य करें। वर्तमान समय में जिस तरह से धार्मिक उन्माद एवं अन्धविश्वास एवं पाखण्ड का बोलबाला बढ़ता जा रहा है यह एक चिन्ता का विषय है, इसलिए सभी आर्यों को यह संकल्प लेना चाहिए कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार एवं वैदिक सिद्धान्तों को और तीव्र गति प्रदान किया जाये तथा अधिक से अधिक लोगों को आर्य विचारधारा से जोड़ा जाये जिससे समाज को सही दिशा मिल सके। कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजनों ने स्वामी जी के क्रांतिकारी विचारों को सुनकर अत्यन्त भावविभोर हो गये।

इस कार्यक्रम के आयोजन में आर्य समाज के यशस्वी प्रधान डॉ. अमर सिंह पुनिया, संरक्षक श्री ओम प्रकाश आर्य, उपप्रधान डॉ. प्रकाश आर्य, मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार आर्य, उपमंत्री श्री सुरेशचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश आर्य एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री शरद आर्य आदि ने अथक परिश्रम करके सफल बनाया। उनके अतिरिक्त श्री महेश कुमार आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, डॉ. योगेश कुमार आर्य, श्री रामकिशन आर्य, श्री विजय कुमार आर्य, श्री नन्दकिशोर आर्य, श्री सत्यदेव आर्य आदि का भी सहयोग रहा है। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता के निरन्तर ओजस्वी व्याख्यान होते रहे और लोगों ने उनके व्याख्यानों से प्रेरित होकर संकल्प भी किये। इसी तरह आर्य समाज के सभी भजनोपदेशकों ने अपने भजनों के माध्यम से कार्यक्रम में धूम मचाई। पहले दिन नगर में शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसका नेतृत्व समाज के प्रधान डॉ. अमर सिंह पुनिया ने किया तथा उत्सव के प्रथम दिन ध्वजारोहण भी आर्य समाज के प्रधान डॉ. अमर सिंह पुनिया के कर–कमलों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–9868211979

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।